अन्नपूर्णा – ध्यानपूर्णा

आंध्रप्रदेश भारत देश की अन्नपूर्णा है। भूमि उर्वरा है, शस्यश्यामल है। परन्तु फिर भी सभी में असंतृप्ति और शून्यता रहती है। एक दिन नींद आती है तो दूसरे दिन नहीं आती, एक दिन खुशी मिलती है तो दूसरे दिन दु:ख होता है।

यहां के वासियों को पेट भर खाने पर भी दिल में शून्यता है। भक्तिमार्ग उनके पास है पर मुक्ति मार्ग नहीं है। ये लोग कितनी भी पूजा करें, विविध मतों के प्रभाव स्वरूप कितने भी यज्ञ, जप आदि करें अपनी जेब भी खाली कर पर कोई लाभ नहीं।

मगर अब पिरामिड स्पिरिचअल सोसाइटियाँ सामने आ रही है। प्रबुद्ध नहीं, सच्चे बुद्ध आ रहे हैं। हमारा देश अन्नपूर्णा से ध्यानपर्णा बन रहा है। अब सब समझ रहे हैं कि ध्यान से ही ज्ञान और ज्ञान से ही मुक्ति मिल सकती है।